रविवार 29 अगस्त, 2021

विषय — ईसा मसीह

स्वर्ण पाठ: 1 तीमुथियुस 2 : 5

"क्योंकि परमेश्वर एक ही है: और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात मसीह यीशु जो मनुष्य है।"

उत्तरदायी अध्ययन: यूहन्ना 1 : 6-13, 16, 17

6 एक मनुष्य परमेश्वर की ओर से आ उपस्थित हुआ जिस का नाम यूहन्ना था।
7 यह गवाही देने आया, कि ज्योति की गवाही दे, ताकि सब उसके द्वारा विश्वास लाएं।
8 वह आप तो वह ज्योति न था, परन्तु उस ज्योति की गवाही देने के लिये आया था।
9 सच्ची ज्योति जो हर एक मनुष्य को प्रकाशित करती है, जगत में आनेवाली थी।
10 वह जगत में था, और जगत उसके द्वारा उत्पन्न हुआ, और जगत ने उसे नहीं पहिचाना।
11 वह अपने घर आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया।
12 परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उस ने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं।
13 वे न तो लोहू से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं।
16 क्योंकि उस की परिपूर्णता से हम सब ने प्राप्त किया अर्थात अनुग्रह पर अनुग्रह।
17 इसलिये कि व्यवस्था तो मूसा के द्वारा दी गई; परन्तु अनुग्रह, और सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा पहुंची।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. यशायाह 9: 2, 6, 7

2 जो लोग अन्धियारे में चल रहे थे उन्होंने बड़ा उजियाला देखा; और जो लोग घोर अन्धकार से भरे हुए मृत्यु के देश में रहते थे, उन पर ज्योति चमकी।

6 क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है; और प्रभुता उसके कांधे पर होगी, और उसका नाम अद्भुत, युक्ति करने वाला, पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा।
7 उसकी प्रभुता सर्वदा बढ़ती रहेगी, और उसकी शान्ति का अन्त न होगा, इसलिये वे उसको दाऊद की राजगद्दी पर इस समय से ले कर सर्वदा के लिये न्याय और धर्म के द्वारा स्थिर किए ओर संभाले रहेगा। सेनाओं के यहोवा की धुन के द्वारा यह हो जाएगा॥

2. मत्ती 4: 23

23 और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उन की सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बल्ता को दूर करता रहा।

3. मत्ती 8 : 5-10, 13

5 और जब वह कफरनहूम में आया तो एक सूबेदार ने उसके पास आकर उस से बिनती की।
6 कि हे प्रभु, मेरा सेवक घर में झोले का मारा बहुत दुखी पड़ा है।
7 उस ने उस से कहा; मैं आकर उसे चंगा करूंगा।
8 सूबेदार ने उत्तर दिया; कि हे प्रभु मैं इस योग्य नहीं, कि तू मेरी छत के तले आए, पर केवल मुख से कह दे तो मेरा सेवक चंगा हो जाएगा।
9 क्योंकि मैं भी पराधीन मनुष्य हूं, और सिपाही मेरे हाथ में हैं, और जब एक से कहता हूं, जा, तो वह जाता है; और दूसरे को कि आ, तो वह आता है; और अपने दास से कहता हूं, कि यह कर, तो वह करता है।
10 यह सुनकर यीशु ने अचम्भा किया, और जो उसके पीछे आ रहे थे उन से कहा; मैं तुम से सच कहता हूं, कि मैं ने इस्राएल में भी ऐसा विश्वास नहीं पाया।
13 और यीशु ने सूबेदार से कहा, जा; जैसा तेरा विश्वास है, वैसा ही तेरे लिये हो: और उसका सेवक उसी घड़ी चंगा हो गया॥

4. मत्ती 9 : 1-8

1 फिर वह नाव पर चढ़कर पार गया; और अपने नगर में आया।
2 और देखो, कई लोग एक झोले के मारे हुए को खाट पर रखकर उसके पास लाए; यीशु ने उन का विश्वास देखकर, उस झोले के मारे हुए से कहा; हे पुत्र, ढाढ़स बान्ध; तेरे पाप क्षमा हुए।
3 और देखो, कई शास्त्रियों ने सोचा, कि यह तो परमेश्वर की निन्दा करता है।
4 यीशु ने उन के मन की बातें मालूम करके कहा, कि तुम लोग अपने अपने मन में बुरा विचार क्यों कर रहे हो?
5 सहज क्या है, यह कहना, कि तेरे पाप क्षमा हुए; या यह कहना कि उठ और चल फिर।

6 परन्तु इसलिये कि तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है (उस ने
झोले के मारे हुए से कहा) उठ: अपनी खाट उठा, और अपने घर चला जा।
7 वह उठकर अपने घर चला गया।
8 लोग यह देखकर डर गए और परमेश्वर की महिमा करने लगे जिस ने मनुष्यों को ऐसा अधिकार दिया है॥

5. यूहन्ना 4 : 48 (यीशु को)

48 यीशु ने कहा।

6. यूहन्ना 5: 19 (वास्तव में)-21, 26, 30

19 इस पर यीशु ने उन से कहा, मैं तुम से सच सच कहता हूं, पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो
पिता को करते देखता है, क्योंकि जिन जिन कामों को वह करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है।
20 क्योंकि पिता पुत्र से प्रीति रखता है और जो जो काम वह आप करता है, वह सब उसे दिखाता है; और वह
इन से भी बड़े काम उसे दिखाएगा, ताकि तुम अचम्भा करो।
21 क्योंकि जैसा पिता मरे हुओं को उठाता और जिलाता है, वैसा ही पुत्र भी जिन्हें चाहता है उन्हें जिलाता है।
26 क्योंकि जिस रीति से पिता अपने आप में जीवन रखता है, उसी रीति से उस ने पुत्र को भी यह अधिकार
दिया है कि अपने आप में जीवन रखे।
30 मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता; जैसा सुनता हूं, वैसा न्याय करता हूं, और मेरा न्याय सच्चा है;
क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, परन्तु अपने भेजने वाले की इच्छा चाहता हूं।

7. यूहन्ना 8 : 29

29 और मेरा भेजनेवाला मेरे साथ है; उस ने मुझे अकेला नहीं छोड़ा; क्योंकि मैं सर्वदा वही काम करता हूं,
जिस से वह प्रसन्न होता है।

8. यूहन्ना 10 : 14-16

14 अच्छा चरवाहा मैं हूं; जिस तरह पिता मुझे जानता है, और मैं पिता को जानता हूं।
15 इसी तरह मैं अपनी भेड़ों को जानता हूं, और मेरी भेड़ें मुझे जानती हैं, और मैं भेड़ों के लिये अपना प्राण
देता हूं।
16 और मेरी और भी भेड़ें हैं, जो इस भेड़शाला की नहीं; मुझे उन का भी लाना अवश्य है, वे मेरा शब्द
सुनेंगी; तब एक ही झुण्ड और एक ही चरवाहा होगा।

9. यूहन्ना 14 : 8-12

8 फिलेप्पुस ने उस से कहा, हे प्रभु, पिता को हमें दिखा दे: यही हमारे लिये बहुत है।

9 यीशु ने उस से कहा; हे फिलेप्पुस, मैं इतने दिन से तुम्हारे साथ हूं, और क्या तू मुझे नहीं जानता? जिस ने मुझे देखा है उस ने पिता को देखा है: तू क्यों कहता है कि पिता को हमें दिखा।
10 क्या तू प्रतीति नहीं करता, कि मैं पिता में हूं, और पिता मुझ में हैं? ये बातें जो मैं तुम से कहता हूं, अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु पिता मुझ में रहकर अपने काम करता है।
11 मेरी ही प्रतीति करो, कि मैं पिता में हूं; और पिता मुझ में है; नहीं तो कामों ही के कारण मेरी प्रतीति करो।
12 मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा, वरन इन से भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं।

10. यूहन्ना 3 : 16, 17

16 क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।
17 परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा, कि जगत पर दंड की आज्ञा दे परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।

11. यूहन्ना 17 : 1-3

1 यीशु ने ये बातें कहीं और अपनी आंखे आकाश की ओर उठाकर कहा, हे पिता, वह घड़ी आ पहुंची, अपने पुत्र की महिमा कर, कि पुत्र भी तेरी महिमा करे।
2 क्योंकि तू ने उस को सब प्राणियों पर अधिकार दिया, कि जिन्हें तू ने उस को दिया है, उन सब को वह अनन्त जीवन दे।
3 और अनन्त जीवन यह है, कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जाने।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 332 : 9 (मसीह)-17, 19 (ईसा)-22, 23 (ईसा)-26, 29-2

मसीह सच्चा विचार है जो अच्छा लगता है, ईश्वर द्वारा मानव चेतना को बोलने वाले पुरुषों के लिए दिव्य संदेश। मसीह, आध्यात्मिक है, — हाँ, दिव्य छवि और समानता, इंद्रियों के भ्रम को दूर करना; मार्ग, सत्य और जीवन, बीमारों को चंगा करना और शैतानों को बाहर निकालना, पाप और बीमारी को नष्ट करना जैसा कि पॉल कहते हैं: "क्योंकि परमेश्वर एक ही है*:* और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है*,* अर्थात मसीह यीशु जो मनुष्य है।"

यीशु ने मसीह का प्रदर्शन किया; उन्होंने साबित किया कि मसीह ईश्वर का दिव्य विचार है - पवित्र आत्मा, या दिलासा देने वाला, दिव्य सिद्धांत, प्रेम को प्रकट करता है, और सभी सत्य की ओर ले जाता है।

यीशु एक कुंवारी का बेटा था। उन्हें परमेश्वर के वचन को बोलने और मनुष्यों के रूप में मनुष्यों के रूप में प्रकट करने के लिए नियुक्त किया गया था क्योंकि वे समझ के साथ-साथ विचारों को भी समझ सकते थे।... उन्होंने

उच्चतम प्रकार की दिव्यता व्यक्त की, जो उस युग में एक मांसल रूप व्यक्त कर सकती थी। असली और आदर्श आदमी में मांस तत्व प्रवेश नहीं कर सकता। इस प्रकार यह है कि मसीह अपनी छवि में भगवान और मनुष्य के बीच के संयोग, या आध्यात्मिक समझौते को दर्शाता है।

2. 333 : 8 (मसीह)-9

... क्राइस्ट इतना नाम नहीं है जितना कि जीसस का ईश्वरीय शीर्षक।

3. 136 : 1-8

यीशु ने अपने चर्च की स्थापना की और मसीह-उपचार की आध्यात्मिक नींव पर अपने मिशन को बनाए रखा। उन्होंने अपने अनुयायियों को सिखाया कि उनके धर्म में एक दिव्य सिद्धांत है, जो त्रुटि को बाहर निकालता है और बीमार और पापी दोनों को ठीक करता है। उन्होंने दावा किया कि कोई भी खुफिया, कार्रवाई, और न ही जीवन भगवान से अलग है। अपने ऊपर आए उत्पीड़न के बावजूद, उसने शारीरिक और आध्यात्मिक रूप से पुरुषों को बचाने के लिए अपनी दिव्य शक्ति का इस्तेमाल किया।

4. 473 : 26-3

यीशु ने जो कुछ कहा उसे प्रदर्शन के द्वारा स्थापित किया, इस प्रकार उसके कार्यों को उसके वचनों से अधिक महत्वपूर्ण बना दिया। उन्होंने जो सिखाया वह साबित किया। यह ईसाई धर्म का विज्ञान है। यीशु ने उस सिद्धांत को सिद्ध कर दिया, जो बीमारों को ठीक करता है और त्रुटि को दूर करता है, ईश्वरीय है। हालाँकि, उनके छात्रों को छोड़कर, कम से कम उनकी शिक्षाओं और उनके गौरवशाली प्रमाणों को समझा, - अर्थात्, जीवन, सत्य और प्रेम (इस अस्वीकृत विज्ञान का सिद्धांत) सभी त्रुटि, बुराई, बीमारी और मृत्यु को नष्ट कर देते हैं।

5. 28 : 15-21

न तो यीशु की उत्पत्ति, चरित्र, और न ही यीशु के कार्य को आम तौर पर समझा गया था। भौतिक दुनिया ने उनके स्वभाव के एक हिस्से को सही नहीं मापा। यहां तक कि उनकी धार्मिकता और पवित्रता ने भी पुरुषों को यह कहने में बाधा नहीं दी: वह एक अतिभक्षी और अशुद्ध का दोस्त है, और बिल्जेबब उसका संरक्षक है।

6. 482 : 19-25

यीशु सिद्ध मनुष्य की सर्वोच्च मानवीय अवधारणा थे। वह मसीह, मसीहा से अविभाज्य था, - मांस के बाहर ईश्वर का दिव्य विचार। इसने यीशु को मामले पर अपना नियंत्रण प्रदर्शित करने में सक्षम बनाया। एन्जिल्स ने पुराने लोगों के लिए इस दोहरे प्रकट होने की घोषणा की, और स्वर्गदूतों ने इसे विश्वास के माध्यम से, हर युग में भूखे दिल के लिए फुसफुसाते हुए कहा।

7. 52 : 19-28

"दुखों का आदमी" भौतिक जीवन और बुद्धिमत्ता की श्रेष्ठता और सभी समावेशी ईश्वर की ताकतवर वास्तविकता को अच्छी तरह से समझता है। ये मन की चिकित्सा या क्रिएचरियन साइंस के दो मुख्य बिंदु थे, जिसने उन्हें प्यार से सशस्त्र किया। ईश्वर की सर्वोच्च सांसारिक प्रतिनिधि, ईश्वरीय शक्ति को प्रतिबिंबित करने की मानवीय क्षमता की बात करते हुए, केवल अपने युग के लिए नहीं, बल्कि सभी युगों के लिए, अपने शिष्यों से कहा। "कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा;" और "और विश्वास करने वालों में ये चिन्ह होंगे कि वे।"

8. 146 : 2 (यह)-12

प्राचीन ईसाई चिकित्सक थे। ईसाई धर्म का यह तत्व क्यों खो गया है? क्योंकि हमारे धर्म की प्रणालियाँ चिकित्सा की हमारी प्रणालियों द्वारा कम या ज्यादा संचालित होती हैं। पहले मूर्तिपूजा सामग्री में विश्वास था। स्कूलों ने देवता में विश्वास के बजाय, ड्रग्स के फैशन पर विश्वास किया है। अपनी ही कलह को नष्ट करने के लिए मामले पर भरोसा करके, स्वास्थ्य और सद्भाव का त्याग किया गया है। ऐसी प्रणालियाँ आध्यात्मिक शक्ति की जीवन शक्ति के बंजर हैं, जिनके द्वारा भौतिक अर्थों को विज्ञान का सेवक बना दिया जाता है और धर्म क्रिस्टलाइज हो जाता है।

9. 347 : 14-22

मसीह, भगवान के आध्यात्मिक या सच्चे विचार के रूप में, अब पुराने के रूप में आता है, गरीबों को सुसमाचार प्रचार करना, बीमारों को चंगा करना, और बुराइयों को बाहर निकालना। क्या यह त्रुटि है जो ईसाई धर्म के एक आवश्यक तत्व को बहाल कर रही है, - अर्थात्, एपोस्टोलिक, दिव्य उपचार? नहीं; यह ईसाई धर्म का विज्ञान है जो इसे बहाल कर रहा है, और अंधेरे में चमकने वाला प्रकाश है, जो कि अंधेरे को समझ में नहीं आता है।

10. 54 : 8-10

उनके शिक्षण और उदाहरण का अनुसरण करने के लिए कौन तैयार है? सभी को जल्द से जल्द या बाद में खुद को मसीह में रखना चाहिए, भगवान का सही विचार।

11. 286 : 9-15

मास्टर ने कहा, "बिना मेरे द्वारा कोई पिता (होने का दिव्य सिद्धांत) के पास नहीं पहुंच सकता।" मसीह, जीवन, सत्य, प्रेम के बिना; क्योंकि मसीह कहता है: "मार्ग मैं हूं." इस मूल पुरुष, यीशु द्वारा पहले से लेकर आखिर तक शारीरिक कार्य को अलग रखा गया था। वह जानता था कि दिव्य सिद्धांत, प्रेम, वास्तविक सब कुछ बनाता और संचालित करता है।

12. 476 : 32-5

यीशु ने विज्ञान में सिद्ध पुरुष को सही ठहराया, जो उसे दिखाई दिया जहां पाप करने वाला नश्वर मनुष्य नश्वर प्रतीत होता है। इस सिद्ध पुरुष में उद्धारकर्ता ने परमेश्वर की अपनी समानता को देखा, और मनुष्य के इस सही दृष्टिकोण ने बीमारों को चंगा किया। इस प्रकार यीशु ने सिखाया कि ईश्वर का राज्य अक्षुण्ण, सार्वभौमिक है, और वह मनुष्य शुद्ध और पवित्र है।

13. 494 : 10-14, 30-2

ईश्वरीय प्रेम हमेशा से मिला है और हमेशा हर मानवीय आवश्यकता को पूरा करेगा। यह कल्पना करना ठीक नहीं है कि यीशु ने दिव्य शक्ति का चयन केवल संख्या के लिए या सीमित समय के लिए ठीक करने के लिए किया, क्योंकि सभी मानव जाति के लिए और सभी समयों में, दिव्य प्रेम सभी अच्छे की आपूर्ति करता है।

हमारे मास्टर ने शैतानों (बुराइयों) को बाहर निकाल दिया और बीमारों को चंगा किया। उनके अनुयायियों के बारे में यह भी कहा जाना चाहिए, कि वे भय और सभी बुराईयों को अपने और दूसरों से दूर करते हैं और बीमारों को ठीक करते हैं। जब भी मनुष्य ईश्वर द्वारा शासित होगा, ईश्वर मनुष्य के माध्यम से बीमारों को चंगा करेगा। सत्य ने त्रुटि को अब बाहर कर दिया जैसा कि उन्नीस सदियों पहले हुआ था।

14. 565 : 13-18

आध्यात्मिक विचार का प्रतिरूपण हमारे मास्टर के सांसारिक जीवन में एक संक्षिप्त इतिहास था; परंतु "उसके राज्य का अन्त न होगा", क्योंकि मसीह, ईश्वर का विचार, अंततः सभी देशों और लोगों पर शासन करेगा - अनिवार्य रूप से, बिल्कुल, अंत में - दिव्य विज्ञान के साथ।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6